ABHIJIT ZINGADE

स्टॉक मार्केट अँड टेक्निकल ऍनालिसिस

Learn Basic Information About Stock Market And Technical Analysis

स्टॉक मार्केट अँड टेक्निकल एॅनालिसिस

अभिजीत झिंगाडे

ये बुक उन लोगो के लिये है जो टेक्निकल एॅनालिसिस सिखना चाहते हे और उसके जरिया सही स्टॉक सिलेक्ट कर स्टॉक मार्केट मे पैसे कमाना चाहते है..

डिस्क्लेमर

स्टॉक मार्केट मे ट्रेडिंग या इन्व्हेस्टमेंट करना ये पुरा मार्केट के रिस्क के उपर है. इस बुक मे जो भी इन्फॉर्मेशन दि गयी है वो एजुकेशनल पर्पस है. अगर ये बुक मे दि गयी इन्फॉर्मेशन के सहारे आप यदी ट्रेडिंग करते है तो ये पुरी आपकी जिम्मेदारी हो जाती है.

कौनसा भी स्टॉक खरीदने से पहिले ट्रेडर या इन्व्हेस्टर को खुद्द रिसर्च करनी चाहिये. या वो उनके फायनान्सियल एडवाईजर को पुछ सकते है.

Table of Contents

1.स्टॉक मार्केट क्या है?
2.स्टॉक सिलेक्शन के तरिके
3.फंडामेंटल एनालिसिस
4.टेक्निकल एनालिसिस
5.टेक्निकल एनालिसिस के फायदे
६. चार्ट पॅटर्न्स
7.टेक्निकल इंडिकेटर्स
8.डिसिप्लिनस और रुल्स
9.कन्क्लुजन
हमारे दुसरे बुक्स

1.स्टॉक मार्केट क्या है**?**

स्टॉक मार्केट एक ऐसी जगह है जहाँ पे स्टॉक का एक्सचेंज होते रहेता है. याने एक ऐसी जगह जहाँ पे लोग आते है और शेअर्स खरीदते है या बेचते है.

हमारे यहा उदाहरण के तौर पर देखा जाये तो नॅशनल स्टॉक एक्सचेंज (एन. एस. इ) और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बी. एस. इ) ये दो एक्सचेंज हे जिसमे ज्यादातर ट्रेडिंग होती रहेती है.

अभि हम एक उदाहरण देखते है जिसके जरीये हम ये समज लेंगे कि स्टोक्स किस तरह से स्टॉक एक्सचेंज पे लिस्ट होते है और उससे किस तरह से फायदा होता है.

मान लिजिए कि आपने एक नयी कंपनी शुरु कि है. पहले आप आपकी खुद्द कि कॅपिटल इन्व्हेस्ट करके उसे शुरु करते है. बादमे जब कंपनी कि ग्रोथ होती जायेगी तो आपको उसे बढ़ाने के लिये और पैंसों कि जरुरत पढेंगी. तो अब आप क्या करोगे? तो तरिका ये हो जाता है कि पार्टनर बढ़ाओ और उनसे पैसे लेकर कंपनी मे इन्व्हेस्ट करो. लेकिन कंपनी जैसे जैसे बढती जाती है वैसे हि पैंसों कि जरुरत भी बढती जाती है. हम पार्टनर बढाकर भी कितने बढा सकते है. हम कुछ पार्टनर बढ़ाने के बाद रुक जाते है और अलग सोल्युशन ढूंढने मे लग जाते है.

तो दुसरा सोल्युशन यहा पे ये हो जाता है कि हमारे कंपनी को स्टॉक एक्सचेंज पे लिस्ट किया जाये. तो हम क्या करते है स्टॉक एक्सचेंज पे जाकर हमारी कंपनी को लिस्ट करते है. जब हम पहिली बार स्टॉक एक्सचेंज पे हमारी कंपनी का स्टॉक लिस्ट करते है तो उसे आई. पी. ओ. (इनिशिअल पब्लिक ऑफरिंग) कहा जाता है. इसे हम प्रायमरी मार्केट भी कहेते है. यहा पे लोग आकर लिस्ट किये हुए स्टोकस या शेअर्स खरीद लेते है. और वो जो पैसा रहेता है वो कंपनी को मिल जाता है.

अब कंपनी को पैसा मिल गया. वो अब वो पैसो के जरीये अपना बिसिनेस बढा सकते है. और जो लोग वो लिस्ट होचूका शेअर खरीदते है तो जब भी शेअर कि प्राईस बढती है तो उसका मुनाफा पब्लिक को होने लगता है. उसके साथ हि कंपनी बोनस या डिव्हिडंड देती रहेती है और उसका भी फायदा पब्लिक को होते रहेता है. तो इस तरह से कंपनी अपना बिसिनेस बढा सकती है. और पब्लिक भी अपना पैसा उस स्टॉक मे डालकर उससे भी फायदा ले सकती है.

जब वही शेअर फिर सेकण्डरी मार्केट मे आता है तो फिर वो स्टॉक एक्सचेंज पे रेग्युलरली ट्रेड होते रहेता है.

तो इस तरह से कंपनी स्टॉक एक्सचेन्ज पे लिस्ट होती है और उसमे ट्रेडिंग होती रहेती है. तो बेसिकली ये होता है स्टॉक मार्केट जहाँ पे शेअर्स खरीद या बेचे जाते है.

2.स्टॉक सिलेक्शन के तरिके

अब देखा जाये तो बहोत सारे शेअर्स स्टॉक मार्केट मे लिस्ट होते है. हमारी जिम्मेदारी इन्व्हेस्टर के तौर पे ये हो जाती है कि सही स्टॉक चुनले जो आगे जाकर अच्छा खासा रिटर्न हमे दे देगा.

तो स्टॉक सिलेक्शन के लिये बेसिकली लोग दो तरह के एनालिसिस करते है. उसमे एक रहेता है फंडामेंटल एनालिसिस और दुसरा टेक्निकल एनालिसिस.

फंडामेंटल एनालिसिस मे स्टॉक कि जो स्टडी कि जाती है वो उसके फायनान्सियल को देखकार कि जाती है. जैसे कि कंपनी कि प्रॉफिट लॉस स्टेटमेंट, बॅलेन्स शीट, नेट प्रॉफिट, रिजल्ट और ऐसी हि बहोत सारी चीजे देखी जाती है जो हमे कंपनी का फायनान्सियल स्टेटस बता देती है.

तो बहोत सारे लोग रहते है जो स्टॉक का सिलेक्शन कंपनी के फंडामेंटल्स को देखकर करते है.

लेकिन कभी कभी क्या हो जाता है कि, फंडामेंटल एनालिसिस करने के लिये हमे टाइम बहोत लग जाता है. क्यों कि हमे बहोत सारी चीजे देखनी पडती है.

तो दुसरा तरिका ये हो जाता है कि स्टॉक कि स्टडी टेक्निकल एनालिसिस का सहारा लेकरं करना. टेक्निकल एनालिसिस याने स्टॉक कि स्टडी चार्ट को देखकर करना. याने हम स्टॉक का चार्ट ओपन करेंगे और उस चार्ट को समझलेने कि कोशिश करेंगे और उसके जरीये हम स्टॉक सिलेक्शन करेंगे.

स्टॉक चार्ट को समजने के बहोत सारे तरिके होते है. वो तारिके हम आने वाले चॅप्टर मे देखेंगे.

तो यहा पर हम इतना हि समज लेंगे कि हमे अगर स्टॉक का सिलेक्शन करना है तो हम या तो फंडामेंटल एनालिसिस का सहारा ले सकते है या तो टेक्निकल एनालिसिस का.

3.फंडामेंटल एनालिसिस

जब हमे स्टॉक सिलेक्शन करना होता है तो हम फंडामेंटल एनालिसिस का सहारा ले सकते है. वैसे तो किसी भी स्टॉक का फंडामेंटल एनालिसिस करते है तो उसमे बहोत सारी चीजे आ जाती है. लेकिन सबसे महत्वपूर्ण जो होता है वो होता है कंपनी का फायनान्सियल स्टेटस. जैसे कि हमने कहा, किसी भी स्टॉक का फंडामेंटल एनालिसिस करना याने उस स्टॉक का या उस कंपनी का फायनान्सियल देखना. जब भी हम फायनान्सिअल्स देखते है तो उसमे बहोत सारी चीजे आ जाती है. जैसे कि कंपनी का प्रॉफिट या लॉस, उस कंपनी कि बॅलेन्स शीट, उस कंपनी के उपर कर्जा कितना है वो देखना, उसी तरह से कंपनी के जो रेग्युलर्ली रिजल्ट आते रहते है उसे देखना और उसकी स्टडी करना. उसी तरह से हम कंपनी कि मॅनेजमेंट को भी देखते है. कि किस तरह के लोग कंपनी को चला रहा है. उन लोगों का कंपनी मे कितना हिस्सा है. कंपनी मे प्रोमोटर्स होल्डिंग कितनी है. और ऐसे हि बहोत सारी चीजे रहेती है उसे देखना पडता है.

जनरली जब हमे स्टॉक को लॉन्ग टर्म के लिये खरीदना होता है तो हम फंडामेंटल एनालिसिस को प्रेफर करते है. अगर हमे स्टॉक को शॉर्ट टर्म के लिये या इंट्राडे के लिये खरीदना है तो हमे स्टॉक चार्ट्स देखने पडते है. याने कि हमे टेक्निकल एनालिसिस करना पडता है. टेक्निकल एनालिसिस किस तरह से करते है वो हम आने वाले चॅप्टर मे देखेंगे.

अभि हम एक इगझाम्पल के तौर पे देखते है कि स्टॉक का फंडामेंटल एनालिसिस किस तरह से किया जाता है.

मान लिजिए कि हम एक कंपनी का शेअर खरीद लेना चाहते है. उस कंपनी का नाम है एक्स. वाय. झेड. अब वो शेअर खरीदनेसे पहिले हमे उसका फंडामेंटल एनालिसिस करना है.

हम पाहिले उसकी मार्केट कॅपिटल देखेंगे और उससे समझने कि कोशिश करेंगे कि वो कंपनी स्मॉल कॅप मे आती है, मिड कॅप मे या लार्ज कॅप मे. जब हम उसका मार्केट कॅपिटल देखेंगे तो हमे पता लग जायेगा कि वो स्मॉल कॅप है, मिड कॅप है या लार्ज कॅप. जनरली जो वेल इस्टॅब्लिश्ड कंपनीज होते है वो लार्ज कॅप मे आते है.

जो आगे जाकर अपना बिसिनेस ग्रो करेंगे वो मिड कॅप मे आ जाते है.

और जो कंपनीज उनका बिसिनेस स्टार्ट हि करते है और उनको जादा समय मार्केट मे नही हुआ होता वो स्मॉल कॅप मे आते है.

वैसे हि मार्केट कॅपिटल कि फिगर देखकर भी हम पता कर सकते है कि वो स्मॉल कॅप मे आती है, मिड कॅप मे या लार्ज कॅप मे.

अभी एक बार हमे पता जग जाये कि वो स्मॉल कॅप है, मिड कॅप है या लार्ज कॅप है तो हम उसके उपर डिसाईड कर सकते है कि हमे वो स्टॉक खरीदना है या नाही.

लेकिन उतना हि काफी नही हो जाता स्टॉक को खरीदने के लिये. तो हमे और भी चीजे देखनी पडती है.

तो हम कंपनी के फायनान्सिअल्स देखेंगे जैसे कि कंपनी कि प्रॉफिट लॉस स्टेटमेंट, बॅलेन्स शीट, कंपनी के जो रेग्युलर्ली रिजल्ट आते है उसे भी हम ट्रॅक करेंगे. मान लीजिये कि वो कंपनी बहोत सारे सालों से प्रॉफिट मे है और उसका प्रदर्शन भी अच्छा खासा है तो हम उस कंपनी को प्रेफर करेंगे.

उसी के साथ हम कंपनी के उपर कर्जा कितना है वो देखेंगे. अगर कंपनी के उपर ज्यादा कर्जा रहेगा तो बाद मे उस कंपनी मे नुकसान होने कि संभावना हो जाती है. तो अगर

कंपनी के उपर जादा कर्जा रहेगा तो हम उसे अव्हॉइड करेंगे. और अगर उस कंपनी के उपर जादा कर्जा नही होगा तो हम उसे प्रेफर करेंगे.

दुसरी महत्वपूर्ण बात ये हो जाती है कि वो कंपनी डिव्हिडंड देती है या नही. अगर कंपनी डिव्हिडंड देती है तो समझलीया जाता है कि वो कंपनी अच्छा खासा प्रदर्शन दिखा रही है. और कंपनी को जो भी प्रॉफिट हो रहा है उसमे से हिस्सा लोगों को भी डिव्हिडंड के रूप मे दे रही है. तो ये एक अच्छी बात हो जाती है. तो कंपनी अगर डिव्हिडंड देती होगी तो हम उसे प्रेफर करेंगे.

तो हमने यहा पे संक्षिप्त मे देखा कि अगर कोई स्टॉक को फंडामेंटल एनालिसिस का सहारा लेकरं सिलेक्ट करना है तो हमे क्या क्या देखना पडता है.

फंडामेंटल एनालिसिस इतना हि नही है, इसमे भी बहोत सारी बाते आ जाती है. लेकिन बेसिक के लिये और पहेचान होने के लिये हमने इतना कव्हर किया है.

हमारे बुक का मेन टॉपिक टेक्निकल एनालिसिस है. इसलिये हम उसपे ज्यादा ध्यान देंगे.

तो चलिये आने वाले चॅप्टर मे हम समजते है कि टेक्निकल एनालिसिस होता क्या है.

4.टेक्निकल एनालिसिस

पिछले चॅप्टर मे हमने फंडामेंटल एनालिसिस होता क्या है ये देखा. इस चॅप्टर मे हम देखेंगे टेक्निकल एनालिसिस क्या होता है और उसका इस्तेमाल करके हम स्टॉक किस तरह से सिलेक्ट करते है.

देखा जाये तो टेक्निकल एनालिसिस याने स्टॉक कि स्टडी चार्ट देखकर करना. फंडामेंटल एनालिसिस मे हम स्टॉक कि स्टडी फायनान्सिअल्स को देखकर करते थे लेकिन टेक्निकल एनालिसिस मे हम स्टॉक कि स्टडी चार्ट को देखकर करेंगे.

हम ऐसे भी कहे सकते है कि स्टॉक चाट्र्स एक रूपांतरण होते है कंपनी के फंडामेंटल्स का. याने कि जो कंपनी मे हो रहा है वही चार्ट पे दिखेगा. और वही चार्ट को देखकर हम समझ पायेंगे कि कंपनी अच्छी तरह से काम कर रही है या नही.

वैसे तो अलग अलग तरह के चाट्र्स होते है जैसे की लाईन चार्ट, कॅंडलस्टिक चार्ट. हमारे चार्ट स्टडी मे हम ज्यादातार कॅंडलस्टिक चार्ट का हि इस्तेमाल करेंगे.

सिम्पल सा तरिका ये हो जाता है की जब हम चार्ट को देखते है और हमे चार्ट उपर जाते हुए दिखता है तो हम कहेते है की स्टॉक की प्राईस बढ रही है और कंपनी अच्छी तरह से काम कर रही है. अगर उस तरह का सिनॅरिओ हमे दिखता है तो हम कहेंगे की वो स्टॉक उसके अपट्रेन्ड मे काम कर रहा है.

उसका हि उलटा ये होता है की हम जब स्टॉक का चार्ट देखते है और वो नीचे जाते हुए दिखता है तो हम कहेंगे की कंपनी अच्छी तरह से काम नही कर रही है और उसकी वजह से स्टॉक की प्राइसेस नीचे जा रही है. याने की वो कंपनी उसके डाऊन ट्रेंड मे काम कर रही है.

और कभी कभी ऐसा भी होता है की कोई कंपनी या स्टॉक का चार्ट ना उपर जाता है ना नीचे जाता है, लेकिन एक रेंज मे ट्रेड होते रहेता है तब हम कहेंगे की कंपनी ना बहोत अच्छा

काम कर रही है ना बहोत बुरा. वो जैसे कल थी वैसे हि आज भी है और उसकी वजह से उसकी प्राईस ना उपर जा रही है ना नीचे. तो उस तरह के स्टॉक चार्ट को या कंपनी को हम कहेंगे की वो उसके साईडवे ट्रेंड मे काम कर रही है.

अच्छी तरह से समझने के लिये हम चार्ट का सहारा ले लेंगे.

फिगर : - एच.डी. एफ. सी. बँक मंथली कँडलस्टिक चार्ट

हमने यहा पे एच.डी. एफ. सी. बँक का मंथली कँडलस्टिक चार्ट लिया है. अभी कँडलस्टिक चार्ट होता क्या है हम आगे जाकर देखेंगे. यहा पे इतना हि देखेंगे की उपर दि गयी फिगर मे स्टॉक का चार्ट कन्टीनुस्ली उपर हि जा रहा है. याने के हम कहेंगे की वो स्टॉक

उसके अपट्रेन्ड मे काम कर रहा है. याने की हम कहेंगे की कंपनी अच्छी तरह से काम कर रही है. और उसके प्राइसेस कन्टीनुस्ली बढ रहे है.

फिगर : - सन फार्मा विकली कॅंडलस्टिक चार्ट

अभी सन फार्मा की फिगर देख लिजिए. यहा पे ये समझ मे आ रहा है की ये स्टॉक कन्टीनुस्ली नीचे जा रहा है. उसके प्राइसेस नीचे जा रहे है. याने की ये स्टॉक उसकी डाऊन ट्रेंड मे काम कर रहा है. जब भी कोई स्टॉक उसके डाऊन ट्रेंड मे काम करता है तो इसका

मतलब ये हो जाता है की कंपनी मे कूच तो प्रॉब्लेम है और उसकी वजह से उसमे गिरावट आ रही है. अगर कोइ इस तरह का स्टॉक हमे मिले तो हम उसे अव्हॉइड करेंगे.

फिगर : - आय. टी. सी. डेली कँडलस्टिक चार्ट

अब हम उपर दि गयी आय. टी. सी. के चार्ट को देख सकते है. यहा पे स्टॉक ना उपर जा रहा है ना नीचे. याने कि स्टॉक ना तो अपट्रेन्ड मे है, ना तो डाऊन ट्रेंड मे. चार्ट को देखकर ऐसा समझ मे आता है कि स्टॉक एक हि रेंज मे बहोत दिनो से काम कर रहा है. जब कोई स्टॉक एक हि रेंज मे बहोत दिनो के लिये काम करता है तो हम कहेंगे कि स्टॉक उसके साईड वेज ट्रेंड मे काम कर रहा है. अगर हमे इस तरह का कोई स्टॉक मिलता है तो भी हम उसमे

ट्रेड करना अव्हॉइड करेंगे. जब हमे उसकी क्लिअर डिरेक्शन पता लग जायेगी तब हि हम उसमे ट्रेड ले लेंगे.

तो यहा पे हमने बेसिक ट्रेंड्स के बारे मे देख लिया. वैसे तो टेक्निकल एनालिसिस मे बहोत सी चीजे आ जाती है. लेकिन हम यहा पे इतना हि देखेंगे.

5.टेक्निकल एनालिसिस के फायदे

इस चॅप्टर मे हम टेक्निकल एनालिसिस के फायदे देखेंगे.

पहिले हम कम्पेअर करेंगे टेक्निकल एनालिसिस को फंडामेंटल एनालिसिस से. फंडामेंटल एनालिसिस करने के लिये हमे बहोत सारा टाइम लग जाता है. क्यूँकी फंडामेंटल एनालिसिस करने के लिये हमे उस कंपनी के फायनान्सिअल्स देखने पडते है. जैसे की उसकी बेलेंस शीट, प्रॉफिट लॉस स्टेटमेंट, कंपनी का कर्जा और बहोत सारी और इन्फॉर्मेशन देखनी पडती है. तो वो देखने के लिये बहोत सारा टाइम लग जाता है.

लेकिन जब हम टेक्निकल एनालिसिस करते है तो हमे खाली उस स्टॉक का चार्ट देखना पडता है. और चार्ट देखने के लिये हमे ज्यादा टाइम नही लगता. हम कुछ हि सेकंड मे कंपनी का चार्ट देख सकते है और उसे समझ भी सकते है.

तो पहिला फायदा ये हो जाता है की हमारा बहोत सारा टाइम बच जाता है जब हम टेक्निकल एनालिसिस करते है.

उसी तरह से जब हमे स्टॉक शॉर्ट टर्म के लिये या इंट्राडे के लिये लेना हो तो उसमे फंडामेंटल्स को उतना देखने की जरुरत नही होती. हम खाली टेक्निकल एनालिसिस करके भी स्टॉक सिलेक्शन कर सकते है.

स्टॉक मे जो शॉर्ट टर्म मूव्ह आते रहते है उसे भी हम चार्ट को देखकर पहेचान सकते है और उसका फायदा ले कर हम ट्रेडिंग कर सकते है.

हम टेक्निकल एनालिसिस करके ट्रेंड का अच्छी तरह से आयडेंटिफिकेशन कर सकते है.

जब हम शॉर्ट टर्म के लिये ट्रेडिंग करते है तो हमे चार्ट के सहारे आसानीसे एंट्री और एक्सिट पॉईंट पता चल जाता है.

और चार्ट एक ऐसा जरिया होता है जिसके जरीये हम कंपनी की बहोत सारी इन्फॉर्मेशन ले सकते है.

और उसके हिसाब से हम डिसिजन मेकिंग कर सकते है.

ऐसे हि बहोत सारे फायदे टेक्निकल एनालिसिस से हमे होते है.

६. चार्ट पॅटर्न्स

अब तक हमने टेक्निकल एनालिसिस के बारे मे बेसिक इन्फॉर्मेशन देख ली. इस चॅप्टर मे हम चार्ट पॅटर्न्स के बारे मे देखेंगे.

चार्ट पॅटर्न्स एक इस तरह के शेप्स रहते है जो चार्ट के उपर बनते रहते है.

जिस तरह का शेप बनेगा उस तरह का नाम उसे दिया जाता है. जैसे कि मानले फ्लॅग जैसा एक शेप चार्ट पे बनेगा तो हम उसे फ्लॅग पॅटर्न कहेंगे.

तो इसी तरह से बहोत सारे पॅटर्न्स रहते है. हम इस चॅप्टर मे अलग अलग तरह के पॅटर्न्स देखेंगे और उस पॅटर्न्स को चार्ट पे किस तरह से देखना है और फिर उसकी स्टडी करके उसमे किस तरह से ट्रेड लेना है वो देखेंगे.

उसके हि साथ टार्गेट और स्टॉप लॉस किस तरह से कॅल्कुलेट करना है उसकी भी जानकारी हम ले लेंगे.

१. ट्रँग्यूलर पॅटर्न: -

एक इस तरह का पॅटर्न जो चार्ट पे बनेगा और वो देखने मे ट्रँगल जैसा लगेगा उसे हम ट्रँग्यूलर पॅटर्न कहेंगे.

इसे हम चार्ट पे हि समझलेने कि कोशिश करते है तो अच्छी तरह से समझ आयेगा.

फिगर : - एच.डी. एफ. सी. डेली कॅंडलस्टिक चार्ट

(ब्रेक आऊट डेट 22 जून 2018)

फिगर मे हमने एच. डी. एफ. सी. का डेली कॅंडलस्टिक चार्ट लिया है.

हमने चार्ट पे ट्रेंड लाईन्स का इस्तेमाल करके एक ट्रँगल जैसा पॅटर्न बनाया है.

अब हम चार्ट पे वो पॅटर्न देखेंगे तो वो ट्रँगल जैसा दिख रहा है इसलिये हम इसे ट्रँग्यूलर पॅटर्न कहेंगे.

ये स्टॉक कन्टीनुस्ली ट्रँगल के अंदर ट्रेड कर रहा था लेकिन 22 जून 2018 को ये स्टॉक ट्रँगल को ब्रेक करके बाहर आगया. हम बडी वाली कॅण्डल देख सकते है जो ट्रँगल से बाहर आ चुकी है. जब भी बडी कँडल अच्छे वोल्युम के साथ पॅटर्न से बाहर आती है तो इसका मतलब ये हो जाता है कि स्टॉक उस दायरे से अभी बाहर आया है और अब उसी दिशा मे वो ट्रेड करेगा. उस बडी वाली कँडल को हम ब्रेक आऊट कँडल भी कह सकते है.

जब इस तरह का स्टॉक हमे मिलता है तो वो एक हमारे लिये ऑपॉर्च्युनिटी बन जाती है उसमे ट्रेड करने कि.

तो अब देखेंगे कि हम उसमे किस तरह से ट्रेड कर सकते है.

अभी ट्रँगल के रुल के हिसाब से जब भी हमारा स्टॉक ब्रेक आऊट वाले कँडल के हाई उपर ट्रेड करेगा तो हम उसमे पोसिशन बना लेंगे.

ट्रँगल कि हाईट हमारा टार्गेट रहेगा. वो हाईट हम ब्रेक आऊट लेवल से कॅल्कुलेट करेंगे.

और हमारा स्टॉप लॉस ब्रेक आऊट कँडल का लो रहेगा. (हमारी ब्रेक आऊट कँडल कि डेट है 22 जून 2018)

अब हम मॅथेमॅटिकली उसे कॅल्कुलेट करते है.

हम स्टॉक बाय करेंगे ब्रेक आऊट कँडल के हाई के उपर.

ब्रेक आऊट कँडल का हाई हे 1912.70. तो जब भी स्टॉक इस व्हॅल्यू के उपर ट्रेड करेगा तो हम उसे खरीद लेंगे.

स्टॉप लॉस हमारा ब्रेक आऊट कँडल का लो रहेगा. तो ब्रेक आऊट कँडल का लो हे 1853.80. तो उसके थोडा नीचे याने कि 1853.

और टार्गेट के लिये हम ट्रैंगल कि हाईट कॅल्कुलेट करेंगे. हाईट के लिये हम ट्रैंगल के उपर कि लेफ्ट वाली कँडल का हाई ले लेंगे और उसमे से हम नीचे कि लेफ्ट वाली कँडल का लो सबट्रॅक्ट करेंगे.

तो उपर वाली लेफ्ट कँडल है 15 मे 2018 कि. और नीचे वाली लेफ्ट कँडल है 23 मे 2018 कि.

तो 15 मे 2018 का हाई है 1941.90. और 23 मे 2018 का लो है 1780.05.

तो ट्रैंगल कि हाईट = 1941.90 – 1780.05 = 161.85

अब ये हाईट हम ब्रेक आऊट के लेव्हल पे ऍड करेंगे.

ब्रेक आऊट लेवल हम जहाँ पे कँडल पेनिट्रेट हुई थी वो ले लेंगे.

तो टार्गेट = ब्रेक आऊट लेवल + ट्रैंगल हाईट

= 1876 + 161.85 = 2037.85

तो हमारा टार्गेट हो जाता है 2037.85.

तो हम बाय करेंगे लगभग 1913 के उपर.

हमारा स्टॉप लॉस रहेगा 1853.

और हमारा टार्गेट हो जाता है 2037.85.

तो आप देख सकते है 27 जुलै 2018 मे स्टॉक ने 2049.95 का हाई बना दिया. और हमारा टार्गेट भी आ गया.

तो इस तरह से हम ट्रैंग्यूलर पॅटर्न ढुंडते है और उपर बताये गये तरिके से हम उसमे ट्रेडिंग करते है.

2. रेकटॅनगुलर पॅटर्न**: -**

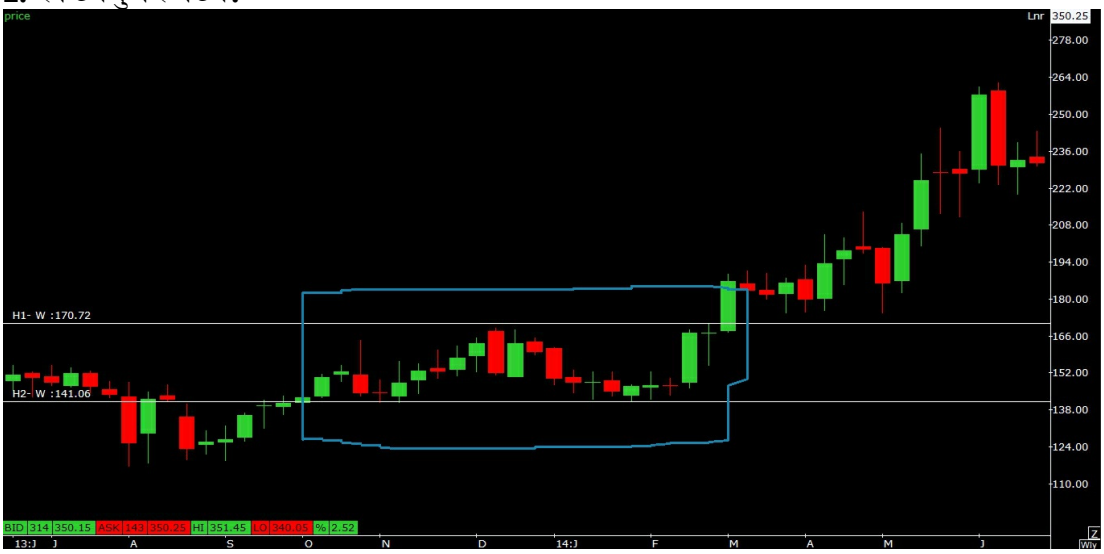

फिगर **: -** अदानी पोट्र्स विकली चार्ट

(ब्रेक आऊट डेट **07** मार्च **2014)**

फिगर मे हमने अदानी पोट्र्स का विकली चार्ट लिया है. जो ड्युरेशन हमने सिलेक्ट किया है वो ऑक्ट 2013 से लेकर मार्च 2014 का है.

अगर आप उपर वाली फिगर को अच्छी तरह से देखेंगे तो आप को पता लग जायेगा कि स्टॉक कन्टीनुस्ली एक रेंज मे काम कर रहा था. उस रेंज को जब हमने ट्रेंड लाईन्स के सहारे ड्रॉ किया तो वो हमे रेकटॅनगुलर पॅटर्न जैसा दिखा. इसलिये हम इसे रेकटॅनगुलर पॅटर्न कहेंगे.

अब कोई भी स्टॉक जब रेकटॅनगुलर पॅटर्न मे ट्रेड करेगा और फिर उसमेसे बाहर आयेगा तो वो हमारे लिये एक ऑपोर्ट्युनिटी बन जाती है उसमे ट्रेड करने कि.

तो हम अब देखेंगे कि रेकटॅनगुलर पॅटर्न मे अगर ब्रेक आऊट मिलता है तो उसमे किस तरह से ट्रेड किया जाता है.

अब पहिले हम पॅटर्न किस तरह से बना था वो देखेंगे. तो हमारा पॅटर्न 04 ऑक्ट 2013 से लेकर 07 मार्च 2014 के पिरेड मे बना था. ये विकली चार्ट है इसलिये हमारा ड्युरेशन यहा पे बडा है.

जब ये पॅटर्न बना तो हमे पता लग गया कि ये रेकटॅनगुलर पॅटर्न बना है. हमने ब्रेक आऊट का इंतजार किया. पॅटर्न का ब्रेक आऊट हमे 07 मार्च 2014 मे मिला.

जब हमे ब्रेक आऊट क्लोजिंग बेसिस पे मिलेगा तब हम उसमे ट्रेडिंग करने का सोचेंगे. यहा पे हमने विकली चार्ट लिया है तो हमे क्लोजिंग विकली बेसिस पे चाहिये. अगर चार्ट डेली रहेगा तो क्लोजिंग डेली बेसिस पे होनी चाहिये. तो हमे यहा पे क्लोजिंग विकली बेसिस पे मिली है. तो हम इसमे ट्रेड ले लेंगे.

तो ट्रेडिंग करने के लिये हमे ब्रेक आऊट कँडल का हाई ब्रेक होने का इंतजार करना है. जब भी ब्रेक आऊट कँडल का हाई ब्रेक होगा तो हम उसमे पोसिशन बना लेंगे. ब्रेक आऊट कँडल ०७ मार्च 2014 (विकली कँडल) का हाई है 189.70. तो जब भी स्टॉक इसके उपर याने कि लगभग 190 पे जायेगा तो हम इसमे पोसिशन बना लेंगे.

हमारा स्टॉप लॉस रहेगा ब्रेक आऊट कँडल का लो. तो 07 मार्च 2014 का लो है 167.40. तो हम स्टॉप लॉस उसके थोडा नीचे रखेंगे. तो हमारा स्टॉप लॉस हो जाता है 167.

और टार्गेट के लिये हम रेकटँगल कि हाईट कॅल्कुलेट करेंगे. जितनी भी उसकी हाईट रहेगी वो हम ब्रेक आऊट लेवल पे ऍड करेंगे.

तो हाईट कॅल्कुलेट करने के लिये हम रेंज मे जो हायर हाई वाली कॅण्डल है उसका हाई ले लेंगे. और जो लोवर लो वाली कँडल है उसका लो ले लेंगे.

तो हायर हाई वाली कँडल है 28 फेब 2014 कि (विकली चार्ट). और उसका हाई है 170.70.

और लोवर लो वाली कँडल है 03 नॉव्ह 2013 कि (विकली चार्ट). और उसका लो है 140.85.

तो पहिले हम रेकटँगल कि हाईट कॅल्कुलेट करेंगे.

रेकटँगल हाईट = 170.70 – 140.85 = 29.85

अब ये हाईट हम ब्रेक आऊट लेवल पे ऍड करेंगे.

हमारी ब्रेक आऊट लेवल है 170.70. (जहाँ पे हमारी कँडल पेनिट्रेट हुई थी.)

तो हमारा फायनल टार्गेट रहेगा.

टार्गेट = ब्रेक आऊट लेवल + हाईट ऑफ रेकटँगल

= 170.70 + 29.85

= 200.55

तो हम इस स्टॉक को बाय करेंगे 190 पे.

हमारा स्टॉप लॉस रहेगा 167.

और हमारा टार्गेट रहेगा 200.55.

तो इस तरह से हम रेकटॅनगुलर पॅटर्न मे ट्रेड करते है.

और आप चार्ट पे देख सकते है 13 जून 2014 विकली कँडल पे स्टॉक ने 261.80 का हाई बनाया.

याने कि हमारा टार्गेट तो हिट हुआ लेकिन उसके साथ हि स्टॉक उससे भी कही ज्यादा उपर चला गया.

एक और बात, यहा पे हमारा रिस्क रिवॉर्ड रेशो उतना अच्छा नही था लेकिन फिर भी स्टॉक बाद मे इतना उपर चला गया कि हमारा रिस्क रिवॉर्ड रेशो अच्छा हो गया.

3. फ्लॅग पॅटर्न**: -**

फिगर **: -** सिमेन्स विकली चार्ट

(ब्रेक आऊट डेट **23** जान **2015)**

अब जो हम पॅटर्न देखेंगे उसे फ्लॅग पॅटर्न कहेते है. क्यूँकि जो पॅटर्न चार्ट पे बन जाता है वो फ्लॅग जैसा दिखता है.

फिगर मे हमने सिमेन्स का विकली चार्ट लिया है. आप फिगर मे देख सकते है कि ये पॅटर्न किस तरह से बना है.

अब हम देखेंगे कि अगर हमे फ्लॅग पॅटर्न चार्ट पे दिख जाता है तो हम उसमे किस तरह से ट्रेडिंग कर सकते है.

तो पहिले हम बाय का देखेंगे. अगर हमे फ्लॅग पॅटर्न पे ट्रेड करना है तो हम पहिले ब्रेक आऊट का इंतजार करेंगे. जब ब्रेक आऊट हो जाये तो हम फिर बाय करने का सोचेंगे.

बाय करने के लिये हमे ब्रेक आऊट कँडल का हाई ब्रेक होने का इंतजार करना पडेगा.

अभी उपर वाली फिगर मे ब्रेक आऊट हुआ था 23 जान 2015 मे (विकली चार्ट पे). और उसका हाय था 1043.85. तो हम उसके थोडा उपर याने कि 1044 पे स्टॉक को बाय करेंगे.

हमारा स्टॉप लॉस रहेगा ब्रेक आऊट वाली कँडल का लो. और ब्रेक आऊट कँडल 23 जान 2015 का लो है 950.15. तो हमारा स्टॉप लॉस रहेगा उसके थोडा नीचे. याने कि हमारा स्टॉप लॉस हो जायेगा 950.

अब हम देखेंगे कि हमे टार्गेट किस तरह से कॅल्कुलेट करना है.

तो टार्गेट कॅल्कुलेट करने के लिये हम फ्लॅग का जो पोल है उसकी हाईट कॅल्कुलेट करेंगे और उसे हम ब्रेक आऊट लेवल पे ऍड करेंगे. (ब्रेक आऊट लेवल याने जहा पे फ्लॅग कि अप्पर ट्रेंड लाईन थी और हमारे स्टॉक ने उसे ब्रेक आऊट दे दिया.)

हाईट कॅल्कुलेट करने के लिये हम फ्लॅग पोल कि हायर कँडल का हाई ले लेंगे और उसमेसे फ्लॅग पोल कि लोवर कँडल का लो मायनस करेंगे.

तो फ्लॅग पोल कि हायर कँडल है 30 मे 2014 कि. और उसका हाई है 989.95.

और फ्लॅग पोल कि लोवर कँडल है 31 जान 2014 कि और उसका लो है 513. तो अब हम हाय मे से लो को मायनस करेंगे.

फ्लॅग हाईट = फ्लॅग पोल हाय - फ्लॅग पोल लो

= 989.95 - 513

= 476.95

तो ये हो गयी हमारी फ्लॅग पोल कि हाईट.

अब हम ये हाईट को ब्रेक आऊट लेवल पे ऍड करेंगे तो हमारा टार्गेट आ जायेगा.

टार्गेट = ब्रेक आऊट लेवल + फ्लॅग हाईट

= 972 + 476.95

= 1448.95

तो आप देख सकते है कि 13 मार्च 2015 विकली चार्ट पे स्टॉक ने 1500 का हाई बना दिया.

तो इस तरह से हम फ्लॅग पॅटर्न का इस्तेमाल करके ट्रेड करते है.

4. राऊंडिंग बॉटम पॅटर्न: -

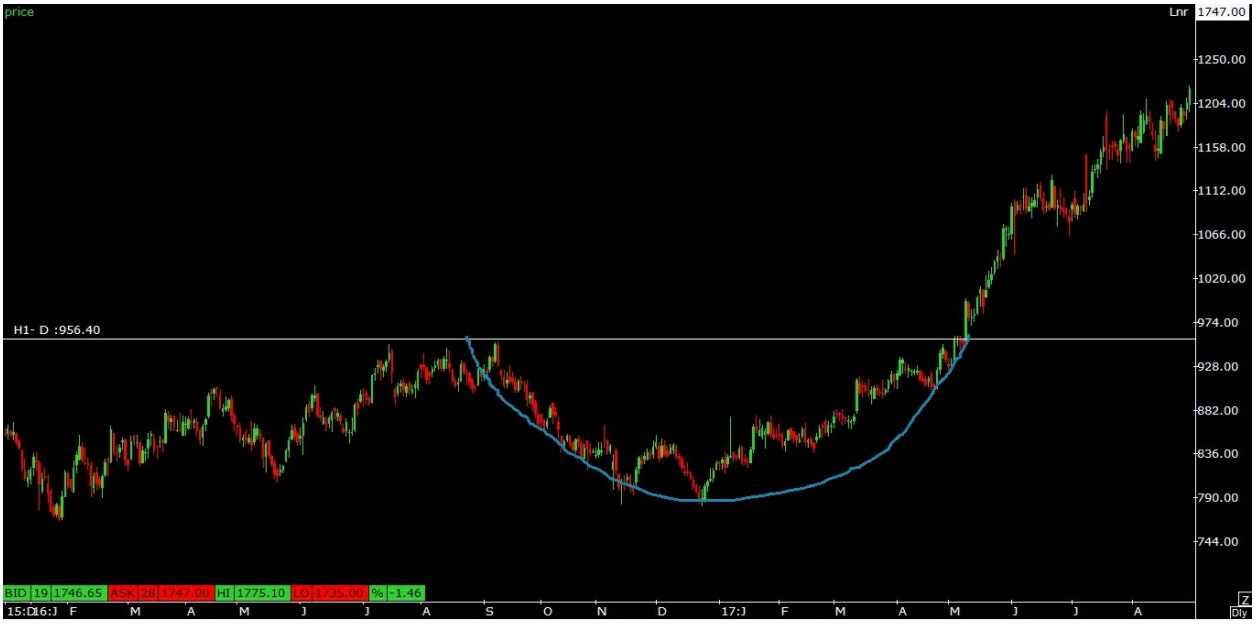

फिगर : - हिंदुस्थान युनिलिव्हर लिमिटेड डेली चार्ट

(ब्रेक आऊट डेट 10 मे 2017)

अब हम देखेंगे राऊंडिंग बॉटम पॅटर्न क्या होता है और उसमे किस तरह से ट्रेडिंग कि जाती है.

उपर दि गयी फिगर मे हमने हिंदुस्थान युनिलिव्हर का डेली चार्ट लिया है. अगर आप ड्रॉ किया हुआ पॅटर्न देखेंगे तो आपको पता लग जायेगा कि जब कोई स्टॉक ट्रेड करते समय चार्ट पे राऊंड जैसा पॅटर्न क्रिएट करता है तो उसे राऊंडिंग बॉटम कहेते है. जब कोई स्टॉक इस पॅटर्न से बाहेर आए तो हम कहेंगे कि राऊंडिंग बॉटम पॅटर्न ब्रेक आऊट हुआ है.

अब हम देखेंगे इसमे ट्रेड किस तरह से करते है.

ये जो पॅटर्न बना था वो 08 सप्टें 2016 से लेकर 10 मे 2017 के बीच बना था. और 10 मे 2017 के दिन ब्रेक आऊट हुआ था.

अब पॅटर्न के रुल के हिसाब से हम ब्रेक आऊट कँडल के हाई के उपर बाय करेंगे. तो ब्रेक आऊट कँडल 10 मे 2017 का हाय है 999. तो हम जब भी स्टॉक 999 के उपर ट्रेड करता है तो हम बाय करेंगे. याने कि 1000 के आसपास हम बाय करेंगे.

हमारा स्टॉप लॉस रहेगा ब्रेक आऊट कँडल 10 मे 2017 के लो के थोडा नीचे. अब इसका लो है 954.10. तो हमारा स्टॉप लॉस रहेगा 954.

और टार्गेट के लिये हम राऊंडिंग बॉटम कि हाईट कॅल्कुलेट करेंगे और उसे ब्रेक आऊट लेवल पे ऍड करेंगे.

राऊंडिंग बॉटम हाईट = हाई ऑफ राऊंडिंग बॉटम हाई कँडल - लो ऑफ राऊंडिंग बॉटम लो कँडल

= 953.60 (08 सप्टें 2016) - 781.95 (23 दिस 2016)

= 171.65

टार्गेट = ब्रेक आऊट लेवल + राऊंडिंग बॉटम हाईट

= 953.60 + 171.65

= 1125.25

तो हम स्टॉक को बाय करेंगे लगभग 1000 के आसपास.

हमारा स्टॉप लॉस रहेगा 954.

और हमारा टार्गेट हो जाता है 1125.25.

तो आप चार्ट पे देख सकते है. 31 ऑग 2017 को स्टॉक ने 1222.80 का हाई बना दिया.

तो इस तरह से हम राऊंडिंग बॉटम पॅटर्न पे ट्रेड करते है.

तो इस तरह से हम पॅटर्न्स ढुंडते है और उसमे ट्रेडिंग करते है.

वैसे तो बहोत सारे पॅटर्न्स होते है लेकिन इस बुक मे हमने जितने कव्हर किये है वो ज्यादा से ज्यादा बार चार्ट पे बनते रहते है और उनका सक्सेस रेशो भी अच्छा है. और अगर आप इनिशिअल लेव्हल पे इतने भी पॅटर्न्स प्रॅक्टिस करेंगे तो भी आप अच्छा खासा पैसा मार्केट से कमा सकते है.

अगले चॅप्टर मे हम देखेंगे कि किस तरह से हम टेक्निकल इंडिकेटर्स का युज करते है.

7.टेक्निकल इंडिकेटर्स

टेक्निकल इंडिकेटर्स एक तरह के मॅथेमॅटिकल कॅल्क्युलेशन्स होते है जो ग्राफिकल रूप मे चार्ट पे ड्रॉ होते है. टेक्निकल इंडिकेटर्स का सहारा हम हमारे ट्रेड को कन्फर्म करने के लिये लेते है. जैसे कि अगर हमारा कोई ट्रेड है और उसमे हमे कन्फयुजन है तो हम टेक्निकल इंडिकेटर्स का सहारा ले सकते है और उससे हम हमारे ट्रेड को कन्फर्म कर सकते है.

इस चॅप्टर मे हम कुछ इम्पॉर्टन्ट टेक्निकल इंडिकेटर्स देखेंगे जो बहोत लोग अपने ट्रेडिंग मे युज करते है और जिसका सक्सेस रेशो भी अच्छा है.

1. मुविंग ऍवरेज**: -**

मुविंग ऍवरेज एक इस तरह का टेक्निकल इंडिकेटर है जिसे लोग अपने ट्रेडिंग मे इस्तेमाल करते है. वैसे तो अलग अलग तरह के मुविंग ऍवरेज रहते है. जैसे कि सिम्पल मुविंग ऍवरेज, एक्सपोनेन्शिअल मुविंग ऍवरेज. इन दोनो मुविंग ऍवरेज का अपना अपना अलग कॅल्क्युलेशन है. ट्रेडर्स अपने हिसाब से इसका इस्तेमाल अपने ट्रेडिंग मे करते है.

यहा पे हम सिम्पल मुविंग ऍवरेज का एगझाम्पल लेते है और उससे समजने कि कोशिश करते है कि मुविंग ऍवरेज किस तरह से वर्क होते है.

फिगर : - एशियन पेंट डेली चार्ट

यहा पे फिगर मे हमने एशिअन पेंट का डेली कँडल स्टिक चार्ट लिया है. और उस चार्ट पे हमने एक सिम्पल मुविंग एव्हरेज ड्रॉ किया है. यहा पे जो सिम्पल मुविंग एव्हरेज है उसकी व्हॅल्यू हमने सिलेक्ट कि है ५० की.

याने कि जो ग्रीन लाईन हमे चार्ट के उपर दिख रही है वो बनी है पिछले ५० दिन के क्लोजिंग प्राइसेस के एव्हरेज कि.

अभी एक ५० सिम्पल मुविंग एव्हरेज का रुल है की अगर कोई स्टॉक ५० सिम्पल मुविंग एव्हरेज के उपर ट्रेड कर रहा है तो समझा जाता है की वो स्टॉक उसके शॉर्ट टर्म के अपट्रेन्ड मे काम कर रहा है. और अगर कोई स्टॉक ५० सिम्पल मुविंग एव्हरेज के नीचे ट्रेड कर रहा है तो इसका मतलब ये हो जाता है की वो स्टॉक उसके शॉर्ट टर्म के डाऊन ट्रेंड मे काम कर रहा है.

तो इस तरह से हम ५० सिम्पल मुविंग एव्हरेज का इस्तेमाल कर के देख सकते है की स्टॉक उसके अपट्रेन्ड मे है या डाऊन ट्रेंड मे. और उसे देखते हुए हम हमारा ट्रेड कन्फर्म कर सकते है.

५० सिम्पल मुविंग एव्हरेज एक अच्छा सपोर्ट और रजिस्टन्स भी माना जाता है.

और भी अलग व्हॅल्यूज लेकर हम मुविंग एव्हरेज ड्रॉ कर सकते है.

तो इस तरह से हम मुविंग एव्हरेज का इस्तेमाल अपनी ट्रेडिंग मे करते है.

२. रिलेटिव्ह स्ट्रेंथ इंडेक्स: -

रिलेटिव्ह स्ट्रेंथ इंडेक्स एक ऐसा इंडिकेटर है जो हमे स्टॉक के ओव्हरबॉट और ओव्हरसोल्ड लेव्हल्स बता देता है. रिलेटिव्ह स्ट्रेंथ इंडेक्स के रुल के हिसाब से जब कोई स्टॉक ३० के आसपास रहेगा तो हम कहेंगे की स्टॉक उसके ओव्हरसोल्ड रिजन मे काम कर रहा है. याने वो सस्ता है और वहा से उसके प्राइसेस बढ़ने की संभावना रहेती है.

और जब कोई स्टॉक ७० के आसपास ट्रेड करेगा तो हम कहेंगे की स्टॉक उसकी ओव्हरबॉट रिजन मे काम कर रहा है. याने की वो महेंगा है और वहा से उसके प्राइसेस कम होने की संभावना हो जाती है.

फिगर: - बजाज ऑटो डेली चार्ट (डेट :- ३० जाने २०१९)

उपर दि गयी फिगर मे हमने बजाज ऑटो का डेली चार्ट लिया है. चार्ट के नीचे हमने रिलेटिव्ह स्ट्रेंथ इंडेक्स ड्रॉ किया है. चार्ट पे कँडल स्टिक के उपर हमने एक सर्कल भी ड्रॉ किया है. और रिलेटिव्ह स्ट्रेंथ इंडेक्स पे भी हमने एक सर्कल ड्रॉ किया है.

अब यहा पे आप ये देख सकते है की सर्कल किये हुए कँडल पे जब स्टॉक ट्रेड कर रहा था तब रिलेटिव्ह स्ट्रेंथ इंडेक्स की व्हॅल्यू २५ के आसपास थी. याने की वो उसके ओव्हरसोल्ड रिजन मे काम कर रहा था. और जैसे की हमने देखा जब कोई भी स्टॉक

ओव्हरसोल्ड रिजन मे रहेगा तो उसके प्राइसेस उपर जाने की संभावना हो जाती है. और आप देख सकते है उसके बाद स्टॉक ने उपर जाना सुरू कर दिया.

फिगर: - बजाज ऑटो डेली चार्ट (डेट :- 07 फेब 2019)

अब उपर दि गयी फिगर मे आप देख सकते है. हमने कँडल को भी मार्क किया है सर्कल से और रिलेटिव्ह स्ट्रेंथ इंडेक्स की व्हॅल्यू को भी. यहा पे आप कँडल से पता कर सकते है की स्टॉक अच्छा खासा उपर ट्रेड कर रहा था. उस कँडल पे आप रिलेटिव्ह स्ट्रेंथ इंडेक्स की व्हॅल्यू देख सकते है. रिलेटिव्ह स्ट्रेंथ इंडेक्स की व्हॅल्यू है ६६ के आसपास. याने की स्टॉक उसके ओव्हरबॉट रिजन के आसपास काम कर रहा है. रिलेटिव्ह स्ट्रेंथ इंडेक्स के रुल के

हिसाब से जब भी कोई स्टॉक ओव्हरबॉट रिजन मे काम करेगा तो बाद मे उसकी प्राइसेस नीचे जाने की संभावना हो जाती है. और फिर आप देख सकते है स्टॉक मे गिरावट आना शुरु हो गई.

3. सुपरट्रेन्ड**: -**

सुपरट्रेन्ड एक टेक्निकल इंडिकेटर है जिसे बहोत सारे ट्रेडर्स अपने ट्रेडिंग मे इस्तेमाल करते है. सुपरट्रेन्ड का इस्तेमाल हम ट्रेंड और उसके साथ ट्रेंड रिव्हर्सल को पहेचानने के लिये करते है.

सुपरट्रेन्ड के रुल के हिसाब से जब भी सुपरट्रेन्ड कँडल के नीचे रहेगा तो उसका मतलब ये हो जाता है की वो स्टॉक उसके अपट्रेन्ड मे काम कर रहा है. और उसी तरह से जब भी सुपरट्रेन्ड कँडल के उपर ट्रेड करेगा तो हम कहेंगे की वो स्टॉक उसके डाउनट्रेंड मे काम कर रहा है.

मान लिजिए की जब सुपरट्रेन्ड उपर से नीचे या नीचे से उपर (कँडल के) शिफ्ट होता है तो वो एक ट्रेंड रिव्हर्सल का इंडिकेशन हो जाता है.

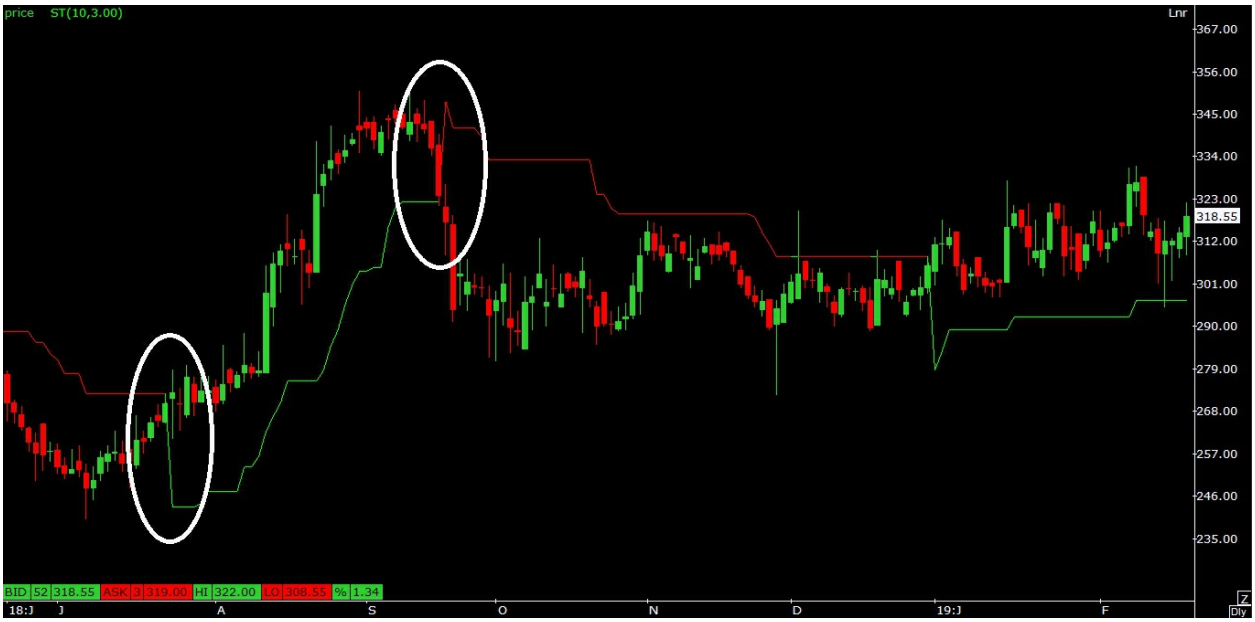

फिगर : - कँडल स्टिक चार्ट विथ सुपरट्रेन्ड

अभी उपर दि गयी फिगर को आप देख सकते है. हमने एक कँडल स्टिक चार्ट लिया है और उसपे सुपरट्रेन्ड ड्रॉ किया है. चार्ट पे आप देख सकते है की जब सुपरट्रेन्ड कँडल के नीचे था तो स्टॉक उसके अपट्रेन्ड मे काम कर रहा था. और जब सुपरट्रेन्ड उपर था तब स्टॉक उसके डाऊन ट्रेंड मे काम कर रहा था. उसी तरह से हमने चार्ट पे दो सर्कल भी मार्क किये है. उसे आप देखेंगे तो आप को पता लग जायेगा की जब सुपरट्रेन्ड उपर से नीचे शिफ्ट हुआ तो स्टॉक मे ट्रेंड रिव्हर्सल आगया और स्टॉक ने उपर जाना शुरु कर दिया. उसी तरह से जब

सुपरट्रेन्ड नीचे से उपर शिफ्ट हुआ तो स्टॉक मे फिरसे ट्रेंड रिव्हर्सल आगया और स्टॉक ने नीचे जाना शुरु कर दिया.

तो इस तरह से हम सुपरट्रेन्ड का इस्तेमाल कर के ट्रेंड को और उसके हि साथ ट्रेंड रिव्हर्सल को पहेचान सकते है.

4. वोल्युम: -

वोल्युम हमे ये बता देता है की स्पेसिफिक पिरेड मे कितने शेअर्स ट्रेड हुए है.

फिगर: - ऍक्सिस बँक डेली चार्ट

उपर दि गयी फिगर मे हमने ऍक्सिस बँक का डेली कँडल स्टिक चार्ट लिया है. चार्ट के नीचे हमने वोल्युम इंडिकेटर ड्रॉ किया है. इसके हिसाब से जब भी स्टॉक मे कोई मुव्हमेंट आती है और उसमे वोल्युम रहेता है तो उसका एक इंडिकेशन होता है की स्टॉक उसी दिशा

मे अभी जाने के लिये तयार हो रहा है. मान लिजिए की स्टॉक एक दिन मे बहोत सारा उपर चला गया और उसके हि साथ उसमे वोल्युम भी था तो इसका मतलब ये हो जाता है की स्टॉक के प्राइसेस उपर ले जाने मे बहोत बडा वोल्युम था याने की बहोत सारे लोग उसमे इन्व्हॉल्व थे. जब बहोत सारे लोग स्टॉक की प्राईस को मूव्ह करने मे इन्व्हॉल्व रहेंगे तो इसका मतलब ये हो जाता है की स्टॉक मे एक मोमेंटम आ गया है और स्टॉक अब उसी दिशा मे जाने के लिये तयार हो रहा है. नीचे दिये गये वोल्युम इंडिकेटर मे अगर वोल्युम का बार बडा रहेगा तो इसका मतलब ये हो जाता है की वोल्युम अच्छा है.

तो इस तरह से हम वोल्युम इंडिकेटर का इस्तेमाल करते है.

तो हमने इस चॅप्टर मे कुछ सिम्पल से टेक्निकल इंडिकेटर्स देख लिये जो की बहोत सारे लोग अपने ट्रेडिंग मे इसका इस्तेमाल करते है. और भी बहोत सारे टेक्निकल इंडिकेटर्स रहते है लेकिन हम यहा पे इतने हि देखेंगे. आप इनकी भी प्रॅक्टिस कर के अच्छा खासा प्रॉफिट मार्केट से कमा सकते है.

8.डिसिप्लिनस और रुल्स

स्टॉक मार्केट मे जब हम ट्रेडिंग करना शुरु करते है तो बहोत सारे स्ट्रॅटेजीज हमे मिल जाते है. जैसे कि कोई स्ट्रॅटेजी इंट्राडे के लिये होगी तो कोई स्ट्रॅटेजी स्विंग के लिये होगी. वैसे हि कोई स्ट्रॅटेजी शॉर्ट टर्म के लिये होगी तो कोई लॉन्ग टर्म के लिये. कोई स्ट्रॅटेजीज रहेंगे पॅटर्न का युज करके तो कोई रहेंगे टेक्निकल इंडिकेटर्स का युज करके. तो बहोत सारे स्ट्रॅटेजीज हमे मिल जाते है. और उसमे भी और एक बात है कि हमे ऐसे भी स्ट्रॅटेजीज मिलते है जिनका सक्सेस रेशो भी अच्छा है.

तो इतना सब कुछ मिलने के बाद भी हम स्टॉक मार्केट से पैसे नही कमा पाते. तो इसके पीछे कि एक वजह है और वो है डिसिप्लिन का अभाव.

याने कि हम पुरी तरह से स्ट्रॅटेजी को सीख लेते है उसकी बॅक टेस्टिंग कर लेते है, और इतना हि नही उसे हम लाईव्ह मार्केट मे भी देखते रहते है. तो हमे लगता है कि अब हम अच्छी तरह से ट्रेडिंग कर सकते है. लेकिन जब हम रिअल मे ट्रेडिंग करना शुरु करते है और हमे ज्यादा तर लॉस होने लगता है तो समझ मे आता है कि हमने जो भी प्रॅक्टिस कि थी वो अब काम नही आ रही है.

क्यूँ कि उसके पीछे कि वजह ये होती है कि हमने प्रॅक्टिस तो कि होती है हमारे स्ट्रॅटेजी कि, लेकिन हमने उसमे डिसिप्लिन को ऍड नही किया होता. जब हम पैसे डालके ट्रेडिंग करना शुरु करते है तो हमारे इमोशन्स ऍक्टिव्हेट होते है. और वो इमोशन्स हमे गलत डिसिजन लेने पे मजबूर करते है. और उसकी वजह से हम हमारे इमोशन्स को कंट्रोल नही कर पाते और मार्केट से लॉस करावा लेते है.

तो एक बात इम्पॉर्टन्ट ये हो जाती है कि जब भी हम हमारे स्ट्रॅटेजी के साथ ट्रेडिंग करेंगे तो हमे स्ट्रॅटेजी के साथ हमारे कुछ डिसिप्लिनस भी बनाने है और उसे हमे कुछ भी हो फॉलो करना हि है.

जब आप स्ट्रॅटेजी के साथ डिसिप्लिनस बनाओगे और उसके साथ ट्रेडिंग करोगे तो आप को समझ मे आयेगा कि रुल्स और डिसिप्लिनस कितने इम्पॉर्टन्ट होते है ट्रेडिंग मे.

रुल्स अगर हम कहेंगे तो उसमे डाइव्हर्सिफिकेशन आ जाता है. हमे स्टॉक मे भी डाइव्हर्सिफिकेशन करना चाहिये और अमाऊंट मे भी. डाइव्हर्सिफिकेशन याने कि एक स्टॉक मे पैसे लगाने कि बजाय 3 से 4 स्टॉक मे पैसे लगाना. तो इससे हमारी रिस्क स्टॉक वाईस डिव्हाइड होती है. वैसे हि हमे पैंसों का भी डाइव्हर्सिफिकेशन करना चाहिये. याने कि हम एक हि स्टॉक मे पुरा पैसे नही डालेंगे. हम हमारी कॅपिटल को समान हिससो मे डिव्हाइड करेंगे और अलग अलग स्टॉक मे डालेंगे तो इससे हमारी रिस्क भी कम हो जाती है.

दुसरा रुल ये हो जाता है कि हमे रिस्क और रिवॉर्ड को मेंटेन करना है. याने कि जब हम ट्रेड लेते है तो हमे रिस्क और रिवॉर्ड कम से कम 1:2 का मेंटेन करना है. याने कि मान लिजिए कि हमे 1 रुपीज का लॉस होता है तो उसके बदले अगर प्रॉफिट होता है तो वो 2 रुपीज का होना चाहिये. तो इस तरह से होगा तो हमे लॉस होगा तो कम से कम होगा और प्रॉफिट होगा तो ज्यादा से ज्यादा होगा. तो इसी तरह से हमे रिस्क और रिवॉर्ड को मेंटेन करना है.

और एक बात हो जाती है कि हमे हमारे स्टॉप लॉस और टार्गेट को डिसिप्लिन से फॉलो करना होगा. याने कि स्ट्रॅटेजी के हिसाब से अगर हमारा स्टॉप लॉस हिट होता है तो हमे लॉस बुक करके बाहर आना होगा और अगर हमारा टार्गेट हिट होता है तो भी हमे प्रॉफिट बुक करके बाहर आना होगा. अगर हम समय मे प्रॉफिट या लॉस बुक नही करते है तो बाद मे

जाकर स्टॉक कि मुव्हमेंट बदल सकती है और हमारे प्रॉफिट का कन्व्हर्शन फिर से लॉस मे हो सकता है या तो लॉस और भी बढ सकता है. तो इस तरह के सिचुएशन्स अव्हाइड करने के लिये हमे स्टॉप लॉस और टार्गेट को डिसिप्लिन से फॉलो करना है.

और भी बहोत सारे डिसिप्लिनस रहते है जो हमे फॉलो करने पडते है. जैसे जैसे आपका एक्सपेरिअन्स बढता जायेगा तो आपकी समझ मार्केट के प्रति बढती जायेगी और आप भी डिसिप्लिन के साथ अच्छे से ट्रेडिंग कर पायेंगे.

9.कन्क्लुजन

इस बुक मे हमने चार्ट पॅटर्न्स और टेक्निकल इंडिकेटर्स को प्रायॉरीटी दि है. हमने अलग अलग चार्ट पॅटर्न्स देख लिये और कुछ इम्पॉर्टन्ट टेक्निकल इंडिकेटर्स भी देख लिए. अगर आप बिगिनर लेवल के लोग है और आप इस बुक मे दि गयी इन्फॉर्मेशन अच्छे से पढ लेते है, समझ लेते है. और बताये गये ट्रेडिंग स्ट्रॅटेजीज को और डिसिप्लिनस को अच्छी तरह से फॉलो करते है तो भी आप मार्केट मे से अच्छा खासा पैसे कमा सकते है. बहोत सारे ट्रेडर्स है जो खाली चार्ट पॅटर्न्स को देख कर ट्रेड करते है और अच्छा खासा प्रॉफिट भी कमा लेते है. कुछ ट्रेडर्स अपने ट्रेडिंग मे टेक्निकल इंडिकेटर्स का सहारा लेते है और वो भी अच्छा खासा पैसा कमा लेते है.

तो हम भी अगर बताये गये चार्ट पॅटर्न्स और उसके साथ टेक्निकल इंडिकेटर्स को अच्छी तरह से समझ लेते है और उसके साथ ट्रेडिंग करते है. तो हम भी अच्छा खासा प्रॉफिट मार्केट से कमा सकते है.

अगर आप को इंटरेस्ट होगा तो आप और भी जो चार्ट पॅटर्न्स रहते है उसकी भी स्टडी कर सकते है और अपने नॉलेज मे गेन कर सकते है. आप और भी जो टेक्निकल इंडिकेटर्स रहते है उसकी भी स्टडी कर सकते है और आप के नॉलेज मे गेन कर सकते है.

एक बात जरूर है कि हम मार्केट मे जितना भी सिखेंगे उतना कम हि है. इसीलिये हमे कन्टीनुस्ली सिखते हि जाना है और इम्प्रुव्हमेंट करती जानी है.

आशा करता हुं कि आप भी अच्छे से सिखेंगे और एक दिन आपकी खुद्द कि भी स्ट्रॅटेजी बनायेंगे और मार्केट से अच्छा खासा प्रॉफिट कमायेंगे.

बेस्ट लक !!!

हमारे दुसरे बुक्स

Authors Other Books published on Amazon: -

About Stock Market: -

1.Fundamentals of Technical Charts: (Stock charts are the pictorial representation of Fundamentals) Kindle Edition

https://www.amazon.in/Fundamentals-Technical-Charts-pictorial-representation-ebook/dp/B07859JCM6/ref=sr_1_1?ie=UTF8&qid=1518104017&sr=8-1&keywords=abhijit+zingade

2. Trading Using Technical Indicators: (Indicators are the data points on stock chart that predict stock movement) Kindle Edition

https://www.amazon.in/Trading-Using-Technical-Indicators-movement-ebook/dp/B0797V58WL/ref=sr_1_2?ie=UTF8&qid=1518104017&sr=8-2&keywords=abhijit+zingade&dpID=51zAfySPe-L&preST=_SY445_QL70_&dpSrc=srch

3. Trading Using Chart Patterns: (Patterns are the Shapes Appeared on Stock Chart) Kindle Edition

https://www.amazon.in/Trading-Using-Chart-Patterns-Appeared-ebook/dp/B078VQ6GX4/ref=sr_1_3?ie=UTF8&qid=1518104017&sr=8-3&keywords=abhijit+zingade&dpID=51qjTMkCYBL&preST=_SY445_QL70_&dpSrc=srch

4. Technical Analysis of Stocks Using Candlestick Charts : (Understanding Hidden Data Stored In Candlesticks) Kindle Edition

https://www.amazon.in/Technical-Analysis-Stocks-Candlestick-Charts-ebook/dp/B07B292M45/ref=sr_1_5?ie=UTF8&qid=1523775122&sr=8-5&keywords=abhijit+zingade

5. Trading Using Patterns and Indicators: (A Combinational Approach to Beat Stock Market) Kindle Edition

https://www.amazon.in/Trading-Using-Patterns-Indicators-Combinational-ebook/dp/B079Q1KL8X/ref=sr_1_4?ie=UTF8&qid=1523775122&sr=8-4&keywords=abhijit+zingade

6.How To Earn Money Using Different Methods: (Start with your own capital or choose zero investment methods for financial freedom) Kindle Edition

https://www.amazon.in/Earn-Money-Using-Different-Methods-ebook/dp/B07C6TX296/ref=sr_1_3?ie=UTF8&qid=1526978866&sr=8-3&keywords=abhijit+zingade

7.Intraday Trading Strategies: < === While Intraday Trading It Is Learnt That Our Emotions Are More Powerful Than Our Knowledge… And To Kill Those Emotions We Need Well Disciplined Mind === > Kindle Edition

by Abhijit Zingade (Author)

https://www.amazon.in/Intraday-Trading-Strategies-Knowledge-Disciplined-ebook/dp/B07D7XQBPD/ref=sr_1_4?ie=UTF8&qid=1531215653&sr=8-4&keywords=abhijit+zingade

8. Trading a Squeeze Breakout: (The Squeeze Breakout Method for Short Term Trading) Kindle Edition

by Abhijit Zingade (Author)

https://www.amazon.in/Trading-Squeeze-Breakout-Method-Short-

ebook/dp/B07F1J6WRJ/ref=sr_1_6?ie=UTF8&qid=1531215653&sr=8-6&keywords=abhijit+zingade

9.Day Trading By Making Own Pivot System: (A Simple yet More Powerful Intraday Strategy) Kindle Edition

by Abhijit Zingade (Author)

https://www.amazon.in/Day-Trading-Making-Pivot-System-ebook/dp/B07FDB7SDQ/ref=sr_1_3?ie=UTF8&qid=1532156370&sr=8-3&keywords=abhijit+zingade

10. Make Swing Trading Profitable : (Proper Entry and Exit Strategy for Short Term Traders) Kindle Edition

https://www.amazon.in/Make-Swing-Trading-Profitable-Strategy-ebook/dp/B07FRJR3K2/ref=sr_1_2?ie=UTF8&qid=1533121817&sr=8-2&keywords=abhijit+zingade

11.The Stock Market: (Where Emotions are Traded more than Disciplines) Kindle Edition

https://www.amazon.in/Stock-Market-Emotions-Traded-Disciplines-ebook/dp/B07G3DM4CY/ref=sr_1_12?ie=UTF8&qid=1534313873&sr=8-12&keywords=abhijit+zingade

12. Intraday Trading Myths: (Think it in a Right Way) Kindle Edition

by Abhijit Zingade (Author)

https://www.amazon.in/Intraday-Trading-Myths-Think-Right-ebook/dp/B07GGRTXMF/ref=sr_1_14?ie=UTF8&qid=1535817761&sr=8-14&keywords=abhijit+zingade

13. How to Identify Potential Multibagger: (A Technical Analysis Way to Choose Right Multibagger) Kindle Edition

by Abhijit Zingade (Author)

https://www.amazon.in/How-Identify-Potential-Multibagger-Technical-ebook/dp/B07H1SHY9C/ref=sr_1_14?ie=UTF8&qid=1540313378&sr=8-14&keywords=abhijit+zingade

14. Intraday Trading Strategies (Part - II): (Using The Power Of Technical Analysis) Kindle Edition

by Abhijit Zingade (Author)

https://www.amazon.in/Intraday-Trading-Strategies-Part-Technical-ebook/dp/B07JMYQNWK/ref=sr_1_15?ie=UTF8&qid=1543415099&sr=8-

15&keywords=abhijit+zingade

Other Books of Authors on Amazon: -

1.Meditation: (A Motivational Door to the Magical World) Kindle Edition

https://www.amazon.in/Meditation-Motivational-Door-Magical-World-ebook/dp/B078QSNKZ9/ref=sr_1_4?ie=UTF8&qid=1518104017&sr=8-4&keywords=abhijit+zingade&dpID=514JyyvKByL&preST=_SY445_QL70_&dpSrc=srch

2. C Programming Made Easy: A beginner's guide

Kindle Edition

https://www.amazon.in/Programming-Made-Easy-beginners-guide-ebook/dp/B076KKR6CD/ref=sr_1_5?ie=UTF8&qid=1518104017&sr=8-5&keywords=abhijit+zingade&dpID=41HknDwZjjL&preST=_SY445_QL70_&dpSrc=srch

Authors YouTube Channel: -

Channel Name: - Learn Stock Charts To Earn

https://www.youtube.com/channel/UC8lK9d08RyuRuE3AKO_FSxw/videos

Authors Blogs: -

1.About Financial : - **https://abhijitzingadefinancial.blogspot.in/**

2. About Motivation :

https://abhijitzingade.blogspot.in/

3.About Spirituality:

https://abhijitzingadespirituality.blogspot.in/

Authors Facebook Page: -

Group Name: - Learn Stock Charts To Earn

https://www.facebook.com/groups/147304922592574/